

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

सरलकरि श्रीराघराचार्य कृतं
॥ श्री महालक्ष्मीस्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री महालक्ष्मीस्तोत्रम् ॥

अखिलागमसारविदां यमिनां
हृदयाञ्जुरिहारकुतूहलिनी।
रिनमज्जनताभिमतार्थकरी
रिजयस्व रमे हरिणा सततम् ॥ 1 ॥

स्मयमानसुरम्यमुखाम्बुरुहा
दयमानमनाः प्रणतेऽरनिशम्।
प्रणरे नगरे दययोदधिनी
रिजयस्व रमे हरिणा सततम् ॥ 2 ॥

चतुरास्यमुत्थैरथिलैरमरैः
कृतनैजमहामहिमस्तुतिका।
रिक्चाम्बुरुहेण सुधामरती
रिजयस्व रमे हरिणा सततम् ॥ 3 ॥

अतिदुस्सहदुःखकरैरमिदै
दूरितैर्भरितं बह्वज्जन्मकृतैः।
परिपालय मां पदयोः पतितं
रिजयस्व रमे हरिणा सततम् ॥ 4 ॥

सुमुखी शुभदा सुगुणा सुलभा
श्रितसज्जन रम्भ रिधि प्रसिता।
सुगतिर्निखिलस्य जनस्य मता
रिजयस्व रमे हरिणा सततम् ॥ 5 ॥

প্রবলারিজিগীষুরলারিমুখে
ইরিসাহমুপেত্য পুরামথিতাৎ।
অযি দুক্ষমযাদুদিতে জলধেঃ
রিজযস্ব রমে হরিণা সততম্ ॥ 6 ॥

পরিপশ্যতি সর্সুপর্গণে
ভগরদ্ভুজমধ্য নিশান্তগতা।
প্রথিতা পরমাত্ম সুলক্ষ্মতযা
রিজযস্ব রমে হরিণা সততম্ ॥ 7 ॥

অরনীতনযাৎরমুরীকৃতরৎ
ৎরযি রামহরের্দযিতা ভরতী।
প্রকটীকুরুতে স্ম সতী সুরিধীন্
রিজযস্ব রমে হরিণা সততম্ ॥ 8 ॥

রিনা রিষুংকান্তাং গতির্নো গতির্নো
সদা রিষুংকান্তাং স্মরেযং স্মরেযম্।
রমে রিষুংকান্তে প্রসীদ প্রসীদ
প্রিযং রিষুংকান্তে প্রদেযাঃ প্রদেযাঃ ॥ 9 ॥

অহং রিষুংকান্তে ত্বদীযাভিহ্নিপদৌ
সুদূরাদিহাগত্য ভক্ত্যা প্রণম্নঃ।
যথাহনন্দসিঙ্কৌ নিমগ্নস্দাস্যাং
তথা মে প্রসীদ প্রসীদ প্রসীদ ॥ 10 ॥

অশেষানপি দোষানে প্রমাদাদসকৃৎকৃতান্।
ক্ষমস্বাস্ব ক্ষমস্বাস্ব মহালক্ষ্মি হরিপ্রিযে ॥ 11 ॥

প্রণতসুরাসুর মণিমকুটাঞ্চিত কোমলপাদ সরোজযুগে
ভরদরশোষণ বহুল ভযাতুর রক্ষণ দক্ষিণদূকপ্রসরে।

परिसरभास्वर निजजनसाधित पारनपूजन हृष्टमनाः
चिरमिदमारस हरिदयिते पुरमोस्पदमिष्टकरी कृपया ॥ 12 ॥

॥ इति श्री महालक्ष्मीस्तोत्रं समाप्तम् ॥